कंपनी : न्यु महाराष्ट्र ट्रेडर्स, २०, नवी पेठ, जुने बस स्टॅण्ड समोर, जलगांव - ४२५००१

अनिल जोशी 8805028021 विवेक जोशी 8380055953

वाण : विवेक फुरसुंगी

कृपया इस डिब्बे के अन्दर का पॉलिथीन एक कोने से थोडा सा खोलकर १०० से २०० सैम्पल बीज निकाल लेवे । उन बीजो की अंकुरण क्षमता की जांच कर लेवे । बीज की अंकुरण क्षमता की संतुष्टि होने पर ही पूरा बीज उपयोग में लेवें । सैम्पलव्दारा अंकुरण क्षमता जांचे बिना सम्पूर्ण बीज का उपयोग नहीं करने की सलाह दी जाती है।

प्याज गोलाकार, मध्यम से बड़े आकारके, हलके लाल रंगके, खानेमे मध्यम से तेज, ९ से १० महिने भंडारण की क्षमता वाले होते है। रोपणी से ११० से १३० दिन के अन्दर तैयार होने वाली एवं लगभग ६०० से ८०० क्विंटल प्रति हेक्टर उत्पादन देने वाली किस्म ।

अनुकूल क्षेत्र : महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश एवं सौम्य जलवायु वाले प्रदेश ।

जमीन : पाणी के उत्तम निकास वाली, भुरभूरी, गोबर की खाद से परीपूर्ण, मध्यम से लेकर दमदार जमीन प्याज के लिए अच्छी मानी जाती है।

बुआई का समय : रोप डालने के लिये सही समय रब्बी (सितंबर से नवंबर अखिर तक) की सिफारिश की जाती है। रोप ४० से ४५ दिन के होने पर पौधे रोपण किया जाना चाहिये ।

बीज की मात्रा : ७ से ८ किलो बीज प्रति हेक्टर ।

नर्सरी तैयार करना: बीज उपचार २ ग्राम थायरम प्रति किलो से करे। अच्छे अंकुरण हेतु नर्सरी का स्थान जोत कर, पलेवा कर, पॉलथीन व्दारा १० से १५ दिनों तक ढक कर किट रहित कर लेवे अथवा प्रति १०० वर्ग मी. स्थान हेतु २५ ग्रा. ट्रायकोडर्मा किरीडी मिश्रण, १२५० ग्राम पकी हुई गोबर की खाद में मिलाकर नर्सरी की जगह मे मिला देवे । जमीन अच्छी भुरभुरी कर उसमें गोबर की खाद एवं नत्र युक्त खाद अच्छी प्रकार से मिलाये। १ हेक्टर प्याज रोपणी हेतु १० आर (आधा बीघा) की नर्सरी तैयार करे ।

अथवा इस जमीन पर ४ से ५ गाडी पही हुई गोबर की खाद, २.५ किलो नत्र एवं ५ किलो स्पूरद (एस.एस.पी.) मिलाये एवं ३ मीटर लम्बी १ मीटर चौडी गादी बनाकर ५ से.मी. अंतर पर एवं २ से.मी. गहराई मे बुआई करें। रोप ६ से ७हप्ते के होने पर पौधे रोपण करना चाहिये ।

जमीन की तैयारी : जमीन की जुताई कर अच्छी भुरभुरी कर लेना चाहिये । प्रति हेक्टेर में २० टन सडी हुई गोबर की खाद + ५० कि. नत्र ५० कि. स्फुरद ५० कि. पोटाश २० कि. गंधक १० कि.पी. एस्. बी. अच्छी तरह मिलाये। खेत का ढलान, जमीन का प्रकार, पानी के साधन इत्यादी के अनुसार गादी अथवा सपाट क्यारिया तैयार किजीये ।

पौध रोपण : समान एवं निरोगी रोप को चुनकर क्यारियो में पंक्तियो की दूरी १५ सेमी. एवं पौधो से पौधो की दूरी १० से.मी. पर ३ से ४ सेमी. गहराई मे रोपणी करें। उसके बाद हल्का पानी देवे ।

पाणी की व्यवस्था : खरीप मोसम मे १० से १२ दिनो के अन्तराल से पानी देना चाहिये। जमीन का प्रकार, ढलान एवं मौसम मे तापमान एवं आद्रता को ध्यान में रख कर पानी देने के अन्तराल को कम या ज्यादा किया जा सकता है। प्याज के कंद विकास के समय पानी की कमी न होने दे परन्तु अति पानी प्याज के लिये हानिकारक है।

औषधी कार्य माला : पौध रोपण के पश्चात् ३ से ४ हफ्ते मे एवं ६ से ७ हफ्ते में प्रति हेक्टेर २५ किग्रा नत्र देवे। रोप यदि कमजोर हो तो १ % डीएपी ०.५% मॅनेशियम सल्फेट की ८ से १० दिनों के अंतर से दो बार छिडकाव करे।

पौधे की अच्छी बढ़वार के लिये १५,३० व ४५ दिनोमे १% एन.पी.के. (१९:१९:१९) का छिडकाव करें और ६० से ७५ दिनों में १% एन.पी.के. (१३:००:४५) एवं ९० दिन के पश्चात १% एन.पी.के. (००:००:५०) का छिडकाव करें।

पौध संरक्षण : प्याज पर मुख्य रूप से झुलसा रोग एवं श्रीप्स किटों का हमला होता है। श्रीप्स के लिये फिप्रोनील ०.५ मिली या डेल्टामेथ्रीन ०.४ मिली या प्रोफेनोफॉस २ मिली प्रति लीटर पानी में मिलाकर १० दिनों के अंतर से दो बार छिडकना चाहिये ।

झुलसा रोग के लिये बावीस्टीन या डायथेन एम-४५ ५०० ग्राम प्रति एकड के हिसाब से छिडकाव करे। प्याज की खुदाई से १० एवं २० दिन पूर्व बावीस्टीन ०.१% का छिडकाव करने से प्याज का भंडारण लम्बे समय तक किया जा सकता है। अन्य रोग अथवा किट दिखाई दे तो पास के औषि केंद्र अथवा औषधी सहायक से संपर्क करें ।

प्याज की खुदाई : प्याज की गरदन (गांजी) नरम होने पर प्याज का पौधा गिरने लगता है जो खुदाई का समय आ गया है का संकेत है। फिर पानी बंद कर दे। हल्की नर्मी (बराप) की अवस्था में प्याज की खुदाई करे । इसे वही क्यारियों में पत्तो से ढककर २ से ३ दिन सुखा लेवे । सुखाने के बाद प्याज के पत्तों को काट लेवें ।

संरक्षण : प्याज का भंडारण छांव वाली खुली हवादार एवं कम तापमान वाले स्थान पर करना चाहिये रबी फसल के भंडारण हेतु नियमानुसार पध्दति की अनुसार की जाती है।

टिप : प्याज की फसल बादलों वालें या विपरित मौसम के लिये अति संवेदनशील होती है तथा उसमें रोग लगने की संभावना बढ जाती है अतः समय-समय पर विशेषज्ञों की सलाह लेवें ।